International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
Impact Factor- 3.866,
Volume 3, Issue 3, March 2016 ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)

ASSOCIATED ASIA RESEARCH FOUNDATION
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

# समाज — संगीत परस्पर संबंध :—

प्रा. डॉ. प्रिती मंगेश कुलकर्णी, सहायक प्राध्यापक,

श्रीमती सु.रा.मोहता महिला महाविद्यालय,

खामगांव, महाराष्ट्र,

ऐसा कहते है की मानव समाज प्रिय प्राणी है । वह समाज के बिना अकेला जीवन व्यतीथ नही कर सकता। उसे नित्य किसीना किसी के संगत की आवश्यकता होती है। इसके अनेक कारण है । उनमेंसे एक प्रमुख कारण यह है की मनुष्य के मन में निरंतर भावनाये निर्माण होती रहती है । इन भावनाओं को प्रकट करने ईच्छा वह रखता है । भावनाओं को व्यक्त करने के लिये वह स्वर, शब्द, रंग, हावभाव, स्पर्श आदि माध्यमोंका उपयोग करता है । **'मुझे कुछ कहना है'** इस मुलभूत भावनासे ललित कलाओं का उद्‌गम दिखायी देता है । यह कहना अनुचित नही होगा की समाज निर्मिती में कलाओं का बडा योगदान है।

मनुष्यने समूह में रहने की शुरुआत की कुछ समय पश्चात उसने अपने पास पडोंस का वातावरण, भौगोलिक परिस्थितीके अनुसार अपनी जीवनशैली निश्चीत की। धिरे धिरे इस शैलीने संस्कृती का रूप धारण किया। ''जीवन व्यतीत करने की पध्दती को अधिक समृध्द बनाने हेतु मानवने पर्यावरणसे अनुकुल बनने के प्रयासों को संस्कृती कहते है ।'' इसमें विविध रितिरिवाज, रूढी, परंपरा आदि का समावेश होता है। इसमेंसें प्रत्येक कृतीसे संगीत का संबंध जुडा है और वह अधिक दृढ हो

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

रहा है । समाज परिवर्तनशील होने के कारण संस्कृती भी परिवर्तनशील है । संस्कृती में काल अनुसार कभी बदलाव आये किंतु उसमें संगीत का स्थान आज भी दृढ है।

संगीत प्रिय होना मानव की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है । ऐसा कहते है की ' रोना और गाना' प्रत्येक मनुष्य को आता है। बालावस्था से ही व्यक्ती तथा समाज संगीतसे जुडा हुआ है। शिशु को सुलाने के लिये गायी वाली लोरी, वेदों की ऋचाओं का गायन, लोगोंका रंजन करता लोक संगीत, होली, बैशाखी, जैसे प्रादेशिक त्योहारोंपर गाता—बाजता संगीत, भारतीय संस्कृतीक आधार माने जाने वाले चार पुरुषार्थ में सें मोक्ष तथा ईश्वरप्राप्ती हेतु ईश्वर के समीप ले जाने वाला भक्ती संगीत, देश प्रेम को जागृत करनेवाला देशभक्ती संगीत, सुरक्षादलों में सैनिकोंका उत्साह वर्धन करने वाला संगीत ऐसे कयी उदाहरण बतायें जा सकते है जिससे यह स्पष्ट होता है कि मानव के हर कृतीसे संगीत जुडा हुआ है।

**संगीत—समाज—परस्पर परिणाम/प्रभाव :—**

भारतीय समाज का इतिहास और भारतीय संगीत का इतिहास अध्ययन करते स्पष्ट होता है की समाज में आये बदलावों का प्रभाव संगीत पर पडा है। समाज में होनेवाला परिवर्तन संगीतमें परावर्तीत होता दिखायी देता है। ये परावर्तन कैसे हुआ इसका अवलोकन करना एक रोमांचकारी अनुभव होगा।

मानव उत्क्रांती को दिखते स्पष्ट होता है कि, मानवने सर्वप्रथम सृष्टी का अवलोकन कर उसमेंसे अनुकरणीय बातों का अनुकरण किया। इन प्रयासों से उसने स्वर प्राप्त किये इन ध्वनी अनुभवोंसे उसने अपने स्वरों का उपयोग करना सिखा। आगे चलकर वैदिक काल में वेदोंकी ऋचाओं

का गान किया जाने लगा। उसे 'सामगान' कहा में जाने लगा। तत्कालीन समाज की आवश्यक्ताये सिमित थी। उनका लक्ष्य ईश्वरप्राप्ती था। परिणाम स्वरुप संगीत का लक्ष्य थी ईश्वरप्राप्ती ही था। समाज में ग्रामों का विकास हुआ। नगर बसने लगे। उनमें जीवनावश्यक व्यवस्थायें आने लगी। इसका परिणाम संगीतमें दिखायी दिया। संगीतमें सात स्वरों का विकास हुआ और 'ग्राम' की रचना संगीत के विद्वानोद्वारा की गयी। षड्जग्राम, मध्यमग्राम, गंधार/निषाद ग्राम । इस समय संगीत की दो धारायें प्रचलित हो चुकी थी—

१) शास्त्रिय संगीत की धारा

२) लोक संगीत की धारा

महार्षी वाल्मिकी संगीत सिध्दांत सें भलीभाँति परिचित थे। रामायण में सप्तजाति तथा षड्ज, मध्यम ग्राम का उपयोग किया गया है। रामायण काल की शिक्षणपध्दती में पाष्यक्रम के अंतर्गत स्वर, स्थान, जाती, ताल, मूर्च्छाना आदि सभी नियमों के अनुसार शिक्षा दी जाती थी।

महाभारत काल में वेद व्यासजी नें देव गांधर्व तथा देशी संगीत का उल्लेख किया है । महाभारत काल में संगीत का क्षेत्र काफी उन्नतशील था। वैदिक तथा लौकिक दोनों प्रकार का संगीत प्रचलित था। पाणिनी काल में चारो वर्णोके संगीत की धारायें भिन्न भिन्न थी। अत: शास्त्रिय संगीत के साथ साथ लोक संगीत का भी प्रचार था। अधिकतर ग्रामीण लोकसंगीत का आनंद उठाते थे। ललित कलाओं के लिये पाणिनीने 'शिल्प' शब्द का प्रयोग किया है। शिल्प का विभाजन दो भागों मे किया —

१) चारु—इसमें संगीतादि सभी ललित कलाओंका समावेश है।

२) कारु—इसमें कुंभ्भकार, सुवर्णकार तथा लोहार आदि लोगोंका संगीत निहित है।

पाणिनी कालमें वैदिक संगीत चरम उत्कर्षपर था। सामगान की अनेक शााखायें भारत के कयी प्रदेशोंमे फैंल चुकी थी।

यहां पर समाज उन्नत अवस्था में या इसिलिये संगीत भी उन्नतावस्था में था। भारतीय समाज तथा संस्कृती बाहरी देशों तक पहुँची थी इसका परिणाम संगीत पर भी पडा संगीत की पवित्रता एवं शुध्दता धीरे धीरे नष्ट होने लगी। संगीत मनोरंजन तथा विलासिताकी ओर बढने लगा। संगीत का क्षेत्र वेद मंत्रों से थोडा—सा हटकर व्यापक होने लगा। मनोविनोद एवं धनोपार्जन के लिये संगीत का अधिक प्रयोग होने लगा।

पुराणों में, वायुपुराण में सात स्वर, तीन ग्राम इक्कीस मूर्च्छनायें, चार ठेके आदि का वर्णन है। पद्मपुरांण में सभी रसों का वर्णन है । स्कंद पुराण में राग — रागिनियोंका उल्लेख है। लिंग पुराण में संगीत कैसे सिखना चाहिये उसके गुण दोषों का वर्णन है। बृहधर्म पुराणमें नाद श्रृती, स्वर राग, गती आदि का वर्णन है। साथ में यह भी बताया गया है कि गायन विधी और नियमोंका पालन प्रत्येक शिष्य को करना आवश्यक है। अत: संगीत अब मनोरंजन की परिधी में पहुँच चुका था।

जैन युग में संगीत जन साधारण में प्रचलित हो चुका था । शुद्र या छोटी जातियों को संगीत की शिक्षा नही देते थे। जैन तथा बौध्द धर्म के शिक्षानुसार प्रत्येक मनुष्य ईश्वर की उपासना तथा संगीत कला सिखने का अधिकारी है अत: सभी जातियों के लोग संगीत की शिक्षा ग्रहण करने लगे। संगीत के शास्त्रिय पक्ष का इस युग मे भी विकास हुआ । 'ठाणांग सुत' में स्वरों की उत्पत्ति, सात स्वरोंका प्राणियों की ध्वनि से सम्बध, स्वरोंका मानव स्वभाव से सम्बध, ग्राम, मूर्च्छना, गीत के गुण—दोष आदि का वर्णन है । वाराणसी के दो मातंग पुत्र उत्तम गायक होकर समूह में संगीत की शिक्षा देने के लिये जगह जगह घूमते थे । यहां पर समाज के रचना में जो बदलाव आया वही संगीत में भी देखा जा सकता है । जो संगीत मोक्ष प्राप्ती का मार्ग माना जाता रहा वही मनोरंजन का साधन बनता चला गया।

## बौध्दकालीन संगीत परंपरा :–

बौध्दकाल में संगीत को राजाश्रय प्राप्त था । राजसभामें गायक वादक नर्तक नियुक्त किये जाते थे । अनेक उत्सवोंका आयोजन होता था । चीनी यात्री फाहियानने इनके उत्सव एवं कला का वर्णन अपने यात्रा वर्णन में दिया है। इस काल में तत्, वितत्, धन, सुषिर इन चतुर्विध वाद्योंका विवरण प्राप्त होता है । इस युगमें संगीत मे ग्राम, मूर्च्छना के साथ रागों का चलन आरंभ हुआ था । अत: संगीत कला की विकास भावनात्मक तथा कलात्मक दृष्टीयोंसे हुआ।

बुध्द युग में संगीत और साहित्य का बहुत विकास हुआ। ग्रंथो की रचना हुयी । समावेद की शिक्षा वैदिक अध्ययन के अंतर्गत मानी गयी । गंधर्व का स्वराविष्कार शिल्प कहलाता था।

मौर्य काल में संपूर्ण भारतवर्ष पर जो राजा आसीन था वह था 'चंद्रगुप्त मौर्य' । चंद्रगुप्त मौर्य संगीत प्रेमी था । इस काल में शास्त्रीय संगीत की अपेक्षा लोकगीत तथा लोकनृत्य का अधिक विकास हुआ । सार्वजनिक रूप से संगीत का आयोजन अधिक होने लगा । मेगस्थनीज के द्वारा लिखीत पुस्तक 'इंद्रिका' में ऐसा उल्लेख है की इस युग में भारतीय तथा यूनानी संगीतकारों ने एक दुसरे देश के संगीतम को समझा गणिकाओं के निवास स्थानपर संगीत का आयोजन होता था । इस काल में संगीत आध्यात्मिकतासे हटकर केवल मनोरंजन तथा जीवकोपार्जन का साधान बन गया।

सम्राट कनिष्क संगीत प्रेमी था अत: उसने बडे बडे संगीत विद्वानों को अपने राज्य में रखकर उनका सन्मान किया । इनके काल में संगीत का आध्यात्मिक पक्ष प्रभावी रहा । तिसरी शताब्दी ई.पू. में नाग युग का प्रचार हुआ। कुषाण राजाओं के ऱ्हास के बाद नाग जाती ने शासन किया । भरत का 'नाट्यशास्त्र' यह नाग काल की महत्त्वपूर्ण उपलब्धी है । आधुनिक काल में भी भरत को संगीत का

आदि पुरूष मानते है । श्रृती तथा संगीत का पूर्ण विवरण है । यह ग्रंथ समस्त भारतीय संगीत का आधार है ।

गुप्त काल को भारतीय इतिहास में स्वर्ण युग के नामसे जाना जात है इस युग में साहित्य, संगीत तथा अन्य सभी ललित कलाओं का उत्कर्ष हुआ। गांधर्व वेद का अध्ययन और अध्यापन राज्य की ओर से होता था । यह स्वर्ण काल कहां गया इसके कयी कारण है । उनमेंसे कुछ— भारत की कला और संस्कृती दूर दूर के देशों में फैल चुकी थी । भारत चीन के बीच अनेक वाद्योंका आदान — प्रदान हुआ । बौध्द धर्म की प्रतिष्ठा होने के कारण वैदिक संस्कृतीका पुन: विकास हुआ । गायन की परंपरा फिरसे आरंभ हुयी । सामगान का महत्व बढने लगा । चीनी यात्री व्हेनसांग ने अपने वृतांत में गुप्त कालीन कला और संगीत का उल्लेख किया है । ई. ३२० में गुप्त काल का सर्वप्रथम सम्राट 'चंद्रगुप्त' था । वह संगीत प्रेमी था । कहते है, की मगध के सम्राट को प्रात:काल संगीत की धुनसे उठाया जाता था ।

षठी शताब्दी में 'सुजीव' नामक भारतीय संगीतज्ञ को चीन बुलाया गया। 'बोधी' नामक एक भारतीय संगीतज्ञ चीन होकर जापान भी गया था । वहा पर उसने 'बैरो' (भैरव) राग का प्रचार किया । (इंडिया एण्ड चायना — प्रबोध चन्द्र बागची) मौर्य काल में मनोरंजनात्मक क्षेत्र अधिक विकसित हुआ । संगीत का क्षेत्र केवल भारत में न रहकर अन्य देशो मे भी फैला । संगीत का स्वर पुन: धार्मिकता की ओर बढने लगा ।

हर्षवर्धन युग में महान संगीत यंतंग द्वारा 'बृहद्देशीय' नामक ग्रय लिखा गया । ग्राम, मूर्च्छाना, ताल, जाति का वर्णन करते हुये 'राग' शब्द काा प्रयोग इनक ग्रंथ की अपूर्व उपलब्ध है । राजपूत काल में संगीत की परंपरा दरबार तक सीमित होने लगी देवालयों मे भक्ती संगीत और लोक संगीत की धारा का निर्माण हुआ । गायन शैलीयाँ दो भागों में बटने लगी

1) कर्नाटक संगीत

२) उत्तर हिंदुस्थानी संगीत

११ वी शताब्दीसे ही मध्यकाल का आविर्भाव माना जाता है । यह काल राजपूतों का शासन काल था, परंतु यवनों के आक्रमणों से ही उत्तरी भारत की राजनैतिक व्यवस्था तितर — वितर होन लगी, अत: उत्तरी तथा दक्षिणी संगीत पध्दतीयां पृथक होने लगी । मुस्लीम शासकोंके कारण उर्दु और फारसी साहित्य का संगीत में प्रवेश है । १३ वी शताब्दी तक मुस्लीमों का राज्य भारत में स्थापित हो चुका था । मुहम्मद बिन कासिम ने सबसे पहले सिंध पर अपना हमला किया । महमुद गजनवी ने भारत पर १७ बार आक्रमण करके यहाँ की विशाल धनसंपत्ती को लूटा । राजपूत राजा भी शिथिल हो गये थे । अत: १२ वी शताब्दी के उत्तरार्धतक दिल्ली मुसलमानों का केन्द्र बन गयी थी । ये सभी संगीत प्रेमी थे । सूफी पंथ के कव्वालों मे मुहम्मद अली के चार बेटोंने कव्वाली की लय धीमी करके धृपद गायकी के समकक्ष विलंबीत और द्रुत ख्याल, आलाप प्रधान ठुमरी, तथा तान प्रधान टप्पा की गायकी के विकास को प्रशस्त किया ।

मुगल काल को 'घराने' का स्वर्णिम काल माना जाता है । गुरू सच्चे मनसे 'नाद ब्रह्म' की उपासना करके गायकी के सूक्ष्म भेद, शिष्यों को सिखाते थे । मुस्लीम काल में भारतीय संगीत या अभिजात संगीत की पूर्ण उन्नती हुयी। वंश दो प्रकार से चलते है । एक जनम सें, तो दूसरा विद्या या ज्ञानसे । गुरू शिष्य परंपरा ही घरानों का मूल है । दीर्घ तालीम, परंपरागत शैली एवं नियम बध्दता को सभालकर एक पिढी सें दूसरे पिढी तक पहुँचाकर घराने सजीव एवं समृध्द बने है ।

स्वर लगाने की पध्दती, बंदिश की बढत, राग विस्तार पध्दति, तान एवं बोलतानों के प्रकार, ताल तथा लय इन बातों पर गायन के घराने की विशेषतायें निर्भर होती है । ग्वालियर, जयपूर, भागरा, किराना, पटियाला, भेंडीबाजार, आदि घरानों ने संगीत को समृध्द किया । समाज यहां भिन्न

भिन्न सलतनों में बटां था। वैसे ही संगीत घरानों से बंधकर भी समृध्द होता रहा । ब्रिटिश लोगों के आनेसे संगीत रियासतों में बंदिस्त हो गया । अर्थात विदेशियों के आने से संगीतज्ञों में परस्पर होड की भावना आने लगी । प्रत्येक गायक अपनी गायकी कों श्रेष्ट बताने लगे । और घराने बंदिस्त हो गये । यहां पर अंग्रेजोंने 'तोडो और राज करो' इस प्रकार जाती भेद को बढावा देकर हमारे भारतीय समाज को तोड दिया । उन्होंने अपने देश की शिक्षा पध्दती यहां पर लागू कर दी । इस से गुरु – शिष्य परंपरा में बाधा आ गयी ।

ब्रिटिश शासन के अधिपत्य से भारत का बुध्दिवादी वर्ग उनके सम्पर्क में आने लगा । देश के नेताओं ने अपनी प्राचीन परंपरा की जिवित रखने के लिये साहित्य संगीत का उपयोग किया । इस समय संगीत कल्पनाहीन, अशिक्षित लोगों के हाथों में था । हीन श्रृंगारिक भावना की अधिक थी । अत: संगीत के पुनरुत्थान और सुधार के लिये दो उत्साही युवकों ने अपना सक्रीय सहयोग दिया।

१) पं. विष्णू दिगंबर पलुस्कर

२) पं. विष्णू नारायण भातखंडे

पं. विष्णू दिगंबर पलुस्कर जी नें संगीत के प्रचार हेतु भारत में अनेक जगहोंपर संगीत विद्यालय आरंभ किये । सर्वप्रथम १९०१ में लाहौर में 'गांधर्व महाविद्यालय' की स्थापना की संगीत को जतन करने हेतु 'स्वरलिपी' तैयार की। पं. विष्णू नारायण भारतखंडे जी ने १० थाटों की रचना प्रचारमें लायी । स्वरलिपी भी तैयार की । 'ऑल इंडिया म्युझिक ॲकॅडमी' की स्थापना की । अंग्रेजी द्वारा लायी गयी शिक्षा पध्दती का प्रभाव संगीत शिक्षा में भी दिखायी देता है । गुरुकुलों मे सिखाया जानेवाला संगीत अब विद्यालयों मे सिखाया जाने लगा । अब तो संगीत महाविद्यालयों में सिखाया जाता है ।

समाज मे आया परिवर्तन संगीत मे परावर्तीत होने का ये इतिहास है । अब तो हम २०२० में जिस पेंडामिक परिस्थिती से गुजरे है इसका प्रभाव संगीतपर भी दिखायी देता है । हर जगह ऑनलाईन क्लासेस लग रही है । मनुष्य प्रत्येक परिस्थिती में संगीत को अपने जीवन शैली के अनुसार अपने जीवन मे सम्मिलीत कर ही लेता है । ज्ञान के विस्फोट से पारदर्शकता आयी है अत: प्रत्येक कलाकार संगीत के आध्यात्मिक रूप से सन्मुख होता दिखायी नही देता । आज के कलाकारों का कम समय में लोकप्रिय होने जल्दी होती है । साधना कम होती जा रही है । संगणकोपर बजाये जाने वाले संगीत में प्रत्यक्ष वादन का आनंद नही है । अत: बदलते समयनुसार संगीत में आत ये बदलाव हमे स्विकार करने होगे।

**संदर्भ** :—


१. भारतीय संगीत का इतिहास

२. भारतीय संगीत में गुरु — शिष्य परंपरा

३. संगीत विशारद

४. संगीत कलाविहार